Name - Chandan Kumar

College Name - Shakuntalam Institue of Teacher's Education, Sasaram Rohatas - 821115

Subject Name - [समाज शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ - (F1)]

Unit - 5

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE / / 20
PAGE

2nd point

* बच्चो की शिक्षा में पाठ्यपुस्तक (syllabus) का भूमिका या योगदान :—

बच्चो के शिक्षा में पाठ्यविवरण (syllabus) का काफी योगदान है क्योंकि syllabus से ही छात्रों को अनुभव होता है कि किस प्रकरण से कितने अंक के प्रश्न पूछे जायेंगे परिक्षा में तथा कितने प्रश्न पूछे जायेंगे। पाठ्यविवरण बच्चो के शिक्षा में एक दिशानिर्देशक के रूप में कार्य करता है। अर्थात् पुस्तको को पुरा करने का एक तरिया मिल जाता है कि कैसे पढ़ा जाए और कौन अधिक महत्वपूर्ण है और उसे कितने दिन में पढ़कर समाप्त कर देना है। पाठ्यविवरण (syllabus) छात्रों तथा अध्यापकों दोनो के लिए मार्गदर्शक का कार्य करती है। इससे अध्यापको एवं छात्रों को यह जानकारी मिलती है कि किसी कक्षा के लिए किसी विषयवस्तु का अध्ययन करना है। इससे पाठ्यविवरण ~~क्लास~~ के माध्यम से स्वाध्याय द्वारा ज्ञान प्राप्त करने में छात्रों को प्रेरणा प्राप्त होती है। इस तरह से बच्चो के शिक्षा में पाठ्यविवरण / पाठ्य पुस्तक का योगदान है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

## शिक्षा के माध्यम के रूप में पाठ्यवस्तु

* :- भारतीय शिक्षण व्यवस्था में पाठ्यपुस्तक की अहम भूमिका है। पाठ्यपुस्तक ही वह आधार है जिसके इर्द-गिर्द कक्षा में होनेवाला शिक्षण घूमता है।

वह आधार जिसपर परिक्षा ली जाती है। वह एक ऐसा जरिया है जिससे कक्षा में होनेवाली शिक्षण प्रक्रिया पर नियंत्रण रखता है, पाठ्यपुस्तक है।

पाठ्यपुस्तक के माध्यम से ही एक तरह का नियंत्रण स्थापित हो सका। पाठ्यपुस्तक के माध्यम से ही ज्ञान सम्प्रेषित हुआ - एक ऐसा ज्ञान जो शिक्षक के लिए बच्चों को देना आवश्यक है। पाठ्यपुस्तक को पढ़ाना व उसके जरिए एक प्रकार का मानक स्थापित करना, उपनिवेशिक व्यवस्था में संभव हुआ और ये व्यवस्था टिकाऊ रही।

## ज्ञान के माध्यम के रूप में पाठ्यपुस्तक :-

* ~~पाठ्य~~ किसी भी ज्ञान के तह तक यानि गहराई तक जाने के लिए हमें ~~किसी~~ भी सबसे पहले विषयों से होकर गुजरना पड़ता है। पाठ्यपुस्तक बनाते समय ~~इस~~ इस बात पर ध्यान दिया जाता

जाता है कि बालकों की योग्यताओं एवं क्षमताओं के अनुरूप पाठ्यपुस्तक हो। पुस्तक का प्रत्येक पाठ बालकों के लिए प्रेरणादायक होता है। प्रत्येक पाठ का कुछ-न-कुछ उद्देश्य होते हैं जिससे बालकों में शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक क्षमता का विकास होता है। जिसके अनुरूप वो होते हैं पाठ्य-पुस्तक के माध्यम से बालक अनुशासन, नैतिकता, चेतना, आत्मविश्वास एवं आदर्शवादी विचारधारा को सिखने का प्रयास करता है। इसके माध्यम से ही हम ज्ञान की प्रमाणिकता को समझते हैं। ज्ञान के माध्यम से बालकों में सकारात्मक सोच का विकास होता है, वह अपने कर्तव्यों को सिखते हैं। किसी भी बालक के लिए पाठ्यपुस्तक एक बहुत ही महत्वपूर्ण माध्यम है जिससे बालकों मे ज्ञान का विकास होता है।

- समाजीकरण के माध्यम के तौर पर पाठ्यपुस्तक :-

पाठ्यपुस्तक के माध्यम से बालकों में समाजीकरण का विकास होता है। परिवार के बाद विद्यालय ही बालक का प्रथम पाठशाला होता है जिसमे बालक का समाजीकरण होता है

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

समाजीकरण में शिक्षकों का उत्तरदायित्व प्रमुखता से आता है पाठ्यपुस्तक के माध्यम से अपने कुछ रिति-रिवाज, प्रथाएं परम्पराएँ, आदर्शों एवं मूल्य होते हैं जिनको हम 'सामाजिक विरासत' कहते हैं। पाठ्यपुस्तक के माध्यम से अतः बालकों का सामाजिक अनुकूलता का विकास होता है। जिसके माध्यम से शिक्षक उसे उसकी वृहद संस्कृति से परिचय कराते हैं। इसके माध्यम से उचित समाजीकरण हेतु कक्षा-कक्षा में खेल के मैदान में सांस्कृतिक क्रियाओं में साहित्यिक गतिविधियों में, व विद्यालयों के उत्सवों में सामाजिक आदर्शों को शिक्षक तथा छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है ताकि उनका अनुकरण कर बालक का समाजीकरण स्वाभाविक रूप से हो सके।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner